ISSN : 2277-7865
Price : ₹ 50

तित्थयर

वर्ष : ३९ अंक : ०८ नवम्बर २०१५

॥ जैन भवन ॥

With Best Compliments From :

THE JUTE SHOP®

www.thejuteshop.com

Promotional Bags

Fashion Bags

Ballyfabs International Limited

5, Middleton Street, Kolkata - 700 071
p: +91 33 2287 2286, f: + 91 33 2289 2519
e: info@thejuteshop.com, w: www.thejuteshop.com

GOTS · ECOCERT · SA 8000 CERTIFIED · ISO 9001 CERTIFIED · Sedex · FAIRTRADE · climatecare · ISO 14001:2004 · OHSAS 18001:2007 · Green America

BFIL0913

Manufacturers of Hessian & Jute Good

ISSN 2277-7865

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - ३९ अंक - ८ नवम्बर २०१५

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिय
पता - Editor : Titthayar, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Phone : (033) 2268-2655, 2272-9028,
Email : jainbhawan@rediffmail.com
Website : www.jainbhawan.in

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें --
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007
Life Membership : India : Rs. 5000.00. Yearly : 500.00
Foreign : $ 500

Published by Dr. Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Kolkata - 700 007, Phone : 2268-2655
and printed by her at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Kolkata - 700 006 Phone : 2241-1006

संपादन

डॉ. लता बोथरा

पी-एच.डी., डी.लिट्

॥ जैन भवन ॥

Editorial Board :

1. Dr. Satyaranjan Banerjee
2. Dr. Sagarmal Jain
3. Dr. Lata Bothra
4. Dr. Jitendra B. Shah
5. Dr. Anupam Jash
6. Dr. Peter Flugel
7. Dr. Rajiv Dugar
8. Smt. Jasmine Dudhoria
9. Smt. Pushpa Boyd

अनुक्रमणिका

क्र. सं. लेख	लेखक	पृ. सं.
अष्टापद साक्षात्	डॉ. लता बोथरा डॉ. पी. एस. ठक्कर	५

ISSN 2277 - 7865

कवरपृष्ठ : जिन पार्श्वनाथ, खाम वाट, थाईलैण्ड

Composed by:
Jain Bhawan Computer Centre, P-25, Kalakar Street Kolkata - 700 007

अष्टापद साक्षात्

डॉ. लता बोथरा
डॉ. पी. एस. ठक्कर

सन् 2006 की कैलास मानसरोवर यात्रा तथा 2011 ई. का 'अष्टापद साक्षात्' तित्थयर अंक में दिये गये अष्टापद खोज संबंधी विवरणों ने समस्त समाज का ध्यान अष्टापद तीर्थ की ओर आकर्षित किया। आश्चर्य होता है कि जिस तीर्थ पर जाने के विवरण 2600 ई. पूर्व से 1800 ई. सन् तक मिलते हैं वे आज लुप्त कैसे मान लिया गया और लुप्त कैसे हो सकता है। नदियां लुप्त हो जाती है, उनकी दिशायें बदल जाती है, प्राचीन सभ्यताएं समय के साथ समाप्त हो जाती है, राज्यों की सीमाएं भी परिवर्तित होती रहती है, क्षेत्रों के नाम बदल जाते है, पुरानी भाषाओं का स्थान नई भाषाएं ले लेती हैं, छोटे-छोटे पर्वत खिर जाते हैं परन्तु ऊंचे-ऊंचे पर्वत शृंखलाएं लाखों वर्षों तक स्थिर रहते है। उनकी ऊंचाई चौड़ाई का परिमाण बढ़ और घट सकता है परन्तु उनकी विद्यमानता बरकरार रहती है। फिर हम अष्टापद पर्वत के लुप्त होने की कल्पना कैसे कर सकते हैं। यह सम्भव है कि समय के अन्तराल में हम अष्टापद की सही अवस्थिति भूल चुके हो परन्तु वो आज भी साक्षात् है। दुर्भाग्यवश विश्वास और पुरुषार्थ की कमी इस महत्वपूर्ण खोज में एक बड़ी रुकावट रही। किसी संस्था द्वारा या व्यक्तिगत रूप से अष्टापद की वास्तविकता को जानने का प्रयास नहीं किया गया। विगत बीस वर्षों के शोध कार्य के फलस्वरूप आज अष्टापद की सही अवस्थिति हमारे सामने हैं।

सामाजिक असहयोग एवं संत समाज की उदासीनता और उपेक्षा के अतिरिक्त भय, अश्रद्धा तथा अविश्वास के साथ साथ दुष्प्रचार के कारण हमें अनेक बाधाओं का सामना भी करना पड़ा और हम चाहकर भी वहाँ जा नहीं सके। इन सब विपरीत परिस्थितियों के बावजूद हमारा विश्वास दृढ़ और अटल रहा तथा लक्ष्य तक पहुँचे।

सन् 2006 में जब अष्टापद के खोज के संदर्भ में हम कैलास मानसरोवर की यात्रा पर गये वहाँ पर हमने देखा कि कैलास के दक्षिण की तरफ एक पर्वत का अष्टापद का नाम दिया गया है। वहाँ हमें गुफाएँ भी मिली, ढ़ाँचे भी मिले लेकिन जैन धर्म सम्बन्धी कोई भी आशाजनक प्रमाण नहीं मिला। हमने अपनी खोजों के दौरान उस क्षेत्र का विस्तृत अध्ययन किया और आसपास के सभी पर्वतों की पूरी जानकारी प्राप्त की लेकिन हम कहीं पर भी ऋषभदेव के निर्वाण स्थल होने की प्रामाणिक पुष्टि नहीं कर पाये। इसी बीच अहमदाबाद सेमिनार में दो बातें सामने आयी जिनपर हमारा ध्यान गया। कुछ लोगों का मत था कि बद्रीनाथ ही कैलास है, तथा जिनेश्वर दासजी जैन ने अपने खोजों के आधार पर थाईलैण्ड में कैलास होने की सम्भावना प्रकट की। यह सही है कि बद्रीनाथ की मूर्ति जिन मूर्ति है लेकिन साहित्य में वर्णित अष्टापद कैलास पर्वत के विवरण से कोई भी साम्यता नहीं मिली। थाईलैण्ड में जब हमने खोजा तो वहाँ हजारों जिन मूर्तियों के अवशेष देखने को मिले। ऐसा प्रतीत होता था कि मानो यहाँ जैन धर्म का कभी गढ़ रहा हो। आज भी वहाँ सैकड़ों जिन मूर्तियाँ है लेकिन अष्टापद वहाँ पर होने का कोई भी पुख्ता प्रमाण हमें नहीं मिला। हमारी खोज का कार्य चल रहा था इस बीच अहमदाबाद के एक सज्जन

अमित दोशी ने हमें बताया की वो अष्टापद कैलास होकर आये है उन्होंने वहाँ के विषय में कई महत्वपूर्ण जानकारियाँ दी, हमने अपने लेख में उनकी दी हुई जानकारियों का विस्तृत विवरण दिया था। भ्रामक दुष्प्रचार के फलस्वरूप हुई विपरीत परिस्थितियों के कारण अष्टापद कहाँ पर अवस्थित है इस विषय में उन्होंने स्पष्ट नहीं बताया।

अभी तक हमारे सामने कैलास नाम के पाँच पर्वत थे। किन्नर कैलास, मणिमहेश कैलास, आदि कैलास, श्रीखण्ड कैलास और कैलास मानसरोवर। लेकिन कहीं पर भी अष्टापद या ऋषभदेव के निर्वाणस्थल होने का प्रमाण हमें नहीं मिला। इस बीच एक और कैलास पर्वत हमें मिला। काश्मीर के उत्तर में कंगूर पर्वत जो चीन के तुर्किस्तान में पड़ता है, ताजिक लोग इसे भी कैलास के रूप में देखते हैं। लेकिन अन्य कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं हुए। अवाक् रह गये हम जब हमने Silk route पर अवस्थित हजारों गुम्फाओं को देखा जिनमें हजारों-हजारों जैन और बौद्ध मूर्तियाँ हमें देखने को मिली। कुछ ऐसी भी मूर्तियों को देखा जो देखने में बौद्ध प्रतीत होती थी लेकिन वास्तव में वे जिन मूर्तियाँ थी क्योंकि उसमें जिन प्रतीक थे। भूटान निवासी लामचीदासजी गोलालारे ने अपनी 'कैलास यात्रा' के संदर्भ में लिखा था कि इस क्षेत्र की जैन मूर्तियाँ उपदेश मूलक मुद्रा में, कहीं दीक्षा समय की तथा हाथ ऊपर उठाये भी है। कहीं-कहीं जन्म कल्याणक प्रतिमाएँ भी हैं और यह सही प्रमाणित हुआ।

हेरोडोटस, प्लीनी आदि प्राचीन इतिहासकारों के विवरणों को हमने पढ़ा। कई बार ऐसा लगता था कि अष्टापद के हम बहुत करीब पहुँच चुके हैं लेकिन नाम साम्य के कारण हम बार भटक रह

थ। एक ही नाम अलग-अलग क्षेत्रों में कई बार देखने को मिला। जिसके कारण हम बार-बार भ्रमित हो जाते थे। इन खोजों से हमें उस क्षेत्र के इतिहास के नये महत्वपूर्ण पहलुओं की जानकारी हुई।

चीनी तुर्किस्तान के खोतान शहर का सम्बन्ध प्राचीन काल से भारत से था। वहाँ के साहित्य में वर्णित है कि सम्राट अशोक का पुत्र कुणाल जो अपनी विमाता के षडयन्त्र के कारण अंधा हो गया था वह तक्षशिला से उस क्षेत्र में गया और वहाँ पर उसने खोतान शहर बसाया। कुणाल के साथ जो लोग खोतान गये थे वे सभी वही पर बस गये। जैन साहित्य में वर्णित है कि कुणाल ने वहाँ से वापिस आकर अपने पुत्र सम्प्रति के लिए अशोक से राज्य प्राप्त किया। कुणाल और सम्प्रति जैन धर्म के अनुयायी थे ये सर्व विदित है। सम्प्रति ने सम्राट बनने के बाद अपने प्रभावित सभी राज्यों में जैन धर्म का प्रसार व प्रचार किया था। खोतान के पास नियासे से तोखारियन लेख प्राकृत भाषा में मिला है जिसे जैन धर्म से अनभिज्ञ विद्वानों ने बौद्ध लेख मान लिया है। भारत के बाहर जो भी प्राचीन लेख या ग्रन्थ प्राकृत भाषा में प्राप्त हुए है उन सब का विधिवत् पुनः अध्ययन किया जाना आवश्यक है।

कैलास अष्टापद की खोजों के संदर्भ में हमें इक्ष्वाकु वंश की उत्पत्ति और राजपूतों के उद्भव स्थान का भी पता चला। कुषाण साम्राज्य की सीमाओं में ये सभी क्षेत्र सम्मिलित थे। फाह्यान, ह्वेनसांग, मार्कोपोलो आदि के विवरणों से भी हमें इन स्थानों की विस्तृत जानकारी मिली। आज से दो हजार वर्ष पूर्व वर्मा, थाईलैण्ड, वियतनाम जिसको चम्पा कहा जाता था, दक्षिण पश्चिम चीन में जैन साधु-साध्वियों का भ्रमण अनवरत होता था। इसका प्रमाण कालकाचार्य की चीन यात्रा के विवरण से भी मिलता है।

ये माना जाता रहा है कि मानव संस्कृति का उद्भव पूर्व से हुआ है। तिब्बत, चीन, जापान, वियतनाम, थाईलैण्ड, कम्बोदिया, वर्मा तथा पूर्वी भारत संस्कृति का मूल केन्द्र थे। यहीं से सभ्यता का विकास होकर पश्चिम की ओर गया। आज के भारत में भी यदि हम देखें तो पश्चिमी भारत और पूर्वी भारत की संस्कृति में मूलभूत अन्तर दिखाई देता है। आज जो पूर्वी क्षेत्र/देश अत्यन्त पिछड़े हुए दिखाई देते है वे कभी बहुत ही उत्कृष्ट सभ्यता के प्रतीक माने जाते थे। मुसलमानों के आदम का स्थान और इसाईयों का Garden of Eden यानि पृथ्वी का स्वर्ग यही पर था। अतः आदि तीर्थंकर ऋषभदेव जिन्होंने मानव जाति में ज्ञान का प्रसार किया उनका क्षेत्र भी पूर्व में होना स्वाभाविक है।

जैन साहित्य में यक्ष-यक्षणियों का वर्णन बहुत विस्तार से मिलता है। प्रत्येक तीर्थंकर के यक्ष और यक्षणियों के नाम एवं प्रतीकों का वर्णन दिया गया है। इसी का प्रभाव हमें पूर्वी देशों, विशेषकर चीन में देखने को मिला। वहाँ पर यक्ष-यक्षिणी की मान्यता अत्याधिक है। शासन देवियों अम्बिका एवं पद्मावती की पूजा पूरे चीन में प्रचलित है। जैन साहित्यानुसार इन यक्ष यक्षणियों के निवास एवं व्यन्तर जाति के देवी-देवताओं का निवास कैलास अष्टापद क्षेत्र में होना चाहिए।

पहले भी यह लिखा जा चुका है कि जिन, व्रात्य और श्रमण शब्द का उद्भव तिब्बत, चीन और मंगोलिया सीमा पर हमें मिलता है। जियान शब्द भी जिन का ही रूपान्तर है और तिब्बत को शी-जियान तथा चीनी तुर्किस्तान को शिन-जियान कहते हैं। चीन में 'जिन' वंश का साम्राज्य अनेक शताब्दियों तक रहा। भूटान निवासी लामचीदास जी ने वहाँ पर जिन जैन जातियों का वर्णन

दिया है उसमें सोनावारे जैनी जो Wallo Kirata कहलाते है, तमांग जाति से है। ये चीन की किरात जाति है जो मूल रूप से मंगोलियन है। मनु धर्मशास्त्र में भी इनको क्षत्रिय कहा गया है। वर्तमान में ये चीन के सिचुआन प्रान्त में रहते है इन्हें Kocchi कहते है। माघ श्रीपंचमी को ये लोग अपना नव वर्ष मनाते हैं जो लगभग 5000 साल पुराना संवत् हैं। इनका वर्णन हमें यूनान और चीन के इतिहास में तथा पवित्र गुरुग्रन्थ साहब में भी मिलता है। तुनावारे जैनी Tocharians लोगों को कहते है ये Indo European जाति है जो चीन में रहते है। कुछ विद्वान इन्हें कुषाणों से संबंधित मानते हैं। पातके जैनी कोरिया में Parhae kingdom के लोग है जो बाद में Balhae कहलाने लगे। इन Balhae और 'जिन' लोगों का Origin एक ही है। अन्य जैन जातियों पर हमारी खोज चल रही है।

चीन तिब्बत पठार जो मंगोलिया की सीमा से नीचे दक्षिण में यूनान तक है, अपने में अनेक प्राचीन इतिहास को समेटे हुए है। इसे हम वर्तमान काल की मानव संस्कृति का उद्‌गम स्थल भी कह सकते हैं। यही से ऋषभ संस्कृति का प्रचार Silk Route के माध्यम से पश्चिमी ऐशियन देशों में, Scandinavian देशों में एवं टर्की, यूनान आदि क्षेत्रों में हुआ क्यों इन सभी जगहों पर ऋषभ संस्कृति के प्रतीक किसी न किसी रूप में मिलते है। इस संदर्भ में बी. जी नायर ने लिखा है– In foreign countries, Rishabha was called in different names like Reshef, Apollo, Tesheb, Ball, and the Bull God of the Mediterranean people. The Phoenicians worshipped Rishabha regarded as Appollo by the Greeks.

Reshef has been identified as Rishabha, the son of Nabhi and Marudevi, and Nabhi been identified with the Chaldean God Nabu and Maru Devi with Murri or Muru. Rishabhadeva of the Armenians was undoubtedly Rishabha, the First Thirthankara of the Jains. A city in Syria is known as Reshafa. In Soviet Armenia was a town called Teshabani. The Babylonion city of Isbekzur seems to be a corrupt form of Rishabhapur . . . A bronze image of Reshef (Rishabha) of the 12th century B.C. was discovered at Alasia near Enkomi in Cyprus. An ancient Greek image of Appollo resembled Tirthankara Rishabha. The images of Rishabha were found at Malatia, Boghaz Koi and also in the monument of Isbukjur as the chief deity of the Hittite pantheon. Excavations in Soviet Armenia at Karmir-Blur near Erivan on the site of the ancient Urartian city of Teshabani have unearthed some images including one bronze statuette of Rishabha"

(Research In Religion.)

जैन साहित्यानुसार अष्टापद पर ऋषभदेव की निर्वाण भूमि जिसे कैलास कहते है उसके पास तीन पर्वतों पर चैत्य स्तूपों का वर्णन मुनियों के निर्वाणभूमि का वर्णन तथा उसी के पास भरत चक्रवर्ती द्वारा बनाया सिंह निषिधा पर्वत का उल्लेख भी मिलता है। चीन में सिंह प्रतीक की बहुत मान्यता है शोध कार्य के दौरान वहाँ

मंदिरों के अलावा बड़ी-बड़ी दुकानों, बड़ी-बड़ी इमारतों के बाहर दोनों तरफ सिंह बने देखे, ऐसा प्रतीत होता है कि इस परम्परा का आदि स्रोत सिंह निषिधा प्रसाद रहा हैं। चीन शब्द सिन से निकला है जो सिंह का अपभ्रंश है।

पूर्व लेख में शम्भाला और सिद्धाश्रम का उल्लेख किया था। तिब्बती ग्रंथों में शम्भाला का अर्थ है शांति एवं विश्राम् की जगह। तीर्थंकरों की निर्वाण भूमि से अधिक शांति की जगह और कोई हो ही नहीं सकती। बड़े-बडे विद्वानों ने संभाला के विषय में बहुत कुछ लिखा है लेकिन मुझे कहीं भी किसी भी जगह सही निष्कर्ष नहीं मिला। संभाला एक बहुत बड़ा क्षेत्र हैं और उसी में अष्टापद अवस्थित है। आज इस पृथ्वी पर कोई भी जगह ऐसी नहीं है जहाँ की जानकारी चेष्टा करने पर न मिल सके। सेटेलाईट के माध्यम से हम सभी जगह के विषय में जान सकते है।

अष्टापद अत्यन्त सुन्दर और रमणीक क्षेत्र है। इसकी सुन्दरता अवर्णनीय है। उसके दक्षिण दिशा में सोने की खाने है। इसके चारों दिशाओं में आठ सिवान है। इसलिए इसका नाम अष्टापद है। छहों ऋतुओं का आनंद यहाँ मिलता है। अनेक प्रकार की मणियाँ, रत्न यहाँ पाये जाते हैं।

चौबीस तीर्थंकरों के अधिष्ठायक देव-देवी सभी यक्ष हैं और सभी व्यन्तर जाति से है। व्यन्तर का अर्थ है अवकाश, आश्रय या जगह। अष्टापद कैलास क्षेत्र में इन व्यन्तर देवी-देवताओं का निवास है और ये ही लोग इस महान तीर्थ के रक्षक हैं। प्राचीन साहित्य के अनुसार यही जगह पृथ्वी का स्वर्ग कहलाता है।

कैलास अष्टापद चीन के अत्यन्त सुन्दर प्रान्त सिचुआन के

दक्षिण-पश्चिम में स्थित है। ये चीन तिब्बत सीमा के निकट तथा कोकोनोर तिब्बत पठार पर अवस्थित है। इसके उत्तर में ज्ञानगंज सिद्धाश्रम हैं। यह भारत के अरुणाचल प्रदेश के विवादित क्षेत्र के पास ही उत्तर दिशा में पड़ता है। 15वीं शताब्दी में सिक्ख धर्म के संस्थापक गुरुनानक ने अरुणाचल में साधना की थी वहाँ से वे ज्ञानगंज भी गये थे। तथा इस क्षेत्र को उन्होंने सच्चखंड कहा हैं। कोकोनोर लेक अत्यन्त विशाल है जिसमें पाँच द्वीप हैं। जिनमें एक द्वीप पर महादेव (ऋषभदेव) का मंदिर है। यहाँ कोई नाव या स्टीमर नहीं जाता। लेक पर बर्फ जम जाती है उस समय योगी लोग बर्फ के ऊपर से जाना आना करते है। गुरुनानक भी यहाँ गये थे ऐसा उल्लेख मिलता है। कैलास पर्वत को Minya konka, Gongga Shan तथा Kongur भी कहते है। वहाँ के स्थानीय लोगों के अनुसार यह पर्वत everest से ऊँचा है। सन् 1930 में Joseph Rock पहले अंग्रेज थे जो इस तरफ आये और इस पर्वत की सुन्दरता देख कर दंग रह गये। उनके शब्दों में "I could not help exclaiming for joy. I marvelled at the scenery which I, the first (European) man ever to stand here, was privileged to see," लगभग 85 साल पूर्व Joseph Rock को यूनान के Lijiang से यहाँ आने में एक महीना लगा था। Konka Gumpha से कैलास पर्वत पर मौसम साफ रहने पर मंदिर दिखाई पड़ते है ऐसा Joseph Rock ने उल्लेख किया है। स्थानीय लोगों का भी यही मानना है कि पृथ्वी में इससे सुन्दर कोई क्षेत्र नहीं है। यहाँ एक रात इस स्थान पर व्यतीत करना दस साल के तप और साधना के बराबर है। वहाँ के एक गुम्फा में पद्म संभव के द्वारा लिखा हुआ है कि सारे बुद्ध भगवान इस पर्वत पर समाहित है इसलिए इस पर्वत के सिर्फ

दर्शन करने से ही सारे पाप धुल जाते हैं। इसी प्रकार का वर्णन हमें जैन साहित्य में भी प्राप्त होता है। जब चौबीसवें तीर्थंकर वर्द्धमान महावीर गौतम स्वामी को कहते है– "आत्मलब्धि और स्ववीर्यबल से अष्टापद पर्वत पर जाकर भरत चक्रवर्ती निर्मित चैत्य में विराजमान चौबीस तीर्थंकरों की वन्दना जो करेंगा वह अवश्य ही मुक्ति प्राप्त करेगा।"

Minya konka या कैलास के चारों ओर बहुत ही सुन्दर पर्वत शृंखलाएं है। पर्वत की परिक्रमा करने के लिए दूर-दूर से लोग आते हैं। क्योंकि यह मान्यता है कि इसकी तीन बार परिक्रमा करने से सभी कामनाएं पूर्ण हो जाती है। इसके दक्षिण पश्चिम में Daocheng या देवस्थान है। जहाँ पर तीन मुख्य पर्वत और सिंहनिषिधा प्रसाद है। इसकी परिक्रमा में आठ सिवान है इसलिए इसे अष्टापद भी कहते हैं। मौसम साफ रहने पर दूर से भी पर्वत के ऊपर गुफाएँ तथा मंदिर दिखाई पड़ते है। इन पर्वतों की पवित्रता बनाये रखने के लिए इन पर चढ़ने की किसी को भी अनुमति नही है। वहाँ के स्थानीय लोग Minya konka अर्थात् कैलास और अष्टापद को एक ही भगवान का क्षेत्र मानते है जो प्रमाणित है। कैलास के पूर्व में मुनियों के निर्वाण भूमि को मुनि वैली कहते है यहाँ थोड़ी-थोड़ी दूर पर झरने है, भिन्न-भिन्न किस्म के रंग-बिरंगे फूलों की खुशबू से सुगंधित बयार ऐसे मदमस्त वातावरण की सृष्टि करती है मानो हम परी लोक में विचर रहे हो। साधना और तप की इस देवभूमि का कण-कण कितना पवित्र होगा इसकी कल्पना मात्र ही हमें रोमांचित कर देती है।

कर्नल टॉड ने लिखा है कि चीन में ऋषभ देव को आडिन के रूप में पूजते हैं। अष्टापद का यह क्षेत्र Aden region कहा

जाता है जो इस विषय में पुख्ता प्रमाण प्रस्तुत करता है। भारत में हम ऋषभदेव को आदिनाथ भी कहते है और ये आदि शब्द ऑडिन से ही प्रचलित हुआ है। Joseph Rock ने अपने वर्णनों में यहाँ पर रिषम गोनबा का उल्लेख किया है जो उच्चारण के अन्तर से ऋषभगुम्फा का ही अपभ्रंश है। इस क्षेत्र के आस-पास हमें अनेक आश्चर्य जनक मूर्तियाँ भी देखने को मिली जिनमें अम्बिका माता की मूर्ति का चित्र इस लेख के साथ संलग्न है।

अष्टापद की खोज के साथ-साथ यह भी निश्चित माना जा सकता है कि भारत की अयोध्या मूल अयोध्या नहीं है। 14वीं शताब्दी में जिनप्रभ सूरी जी ने विविध तीर्थकल्प में लिखा था कि अयोध्या के उड्यकूट पर्वत से अष्टापद दिखायी देता है जो भारत की अयोध्या से संभव नहीं है। 18वीं शताब्दी में भूटान निवासी लामचीदास जी ने मेरी कैलास यात्रा में लिखा था की कैलास, अयोध्या के उत्तर में एकदम सीधे है। यह भी भारत की अयोध्या के संदर्भ में सही नहीं बैठता। थाईलैण्ड की अयोध्या के सीध में कैलास होने के कारण यह माना जा सकता है कि लामचीदासजी ने जिस अयोध्या के विषय में कहा था वह थाईलैण्ड की अयोध्या थी। वास्तविक ऋषभदेव के समय की अयोध्या या राम की अयोध्या कहाँ पर थी इस पर तथा अनेक प्राचीन नगरों की मूल स्थिति के विषय में हमारा अध्ययन जारी है। इस क्षेत्र की नदियों, भौगोलिक अवस्थाओं, प्राचीन नगरों तथा वहाँ पर मिलने वाले प्राचीन अवशेषों के विषय में विस्तृत जानकारी शीघ्र ही देने कोशिश जारी है।

अष्टापद की खोज सिर्फ जैन संस्कृति ही नहीं बल्कि मानव सभ्यता और संस्कृति के आदि स्रोत तक हमें पहुँचा रही है जो

वास्तव में एक बहुत बड़ी उपलब्धि है। ये हमारे गौरव और अस्मिता का प्रतीक है, जिसपर विदेशी खोज कर्ताओं, पुरातत्ववेत्ताओं का ठप्पा/मोहर की हमें कोई अवश्यकता नहीं है। क्यों कि जब M. A. Stein जैसे प्रसिद्ध खोजकर्ता जिन शब्द को बौद्ध परिप्रेक्ष्य में लेते हैं और कुछ विदेशी खोजकर्ताओं के अनुसार शाकाहारी लोग ऊँचे पर्वतों पर नहीं रह सकते और पर्वतों के ऊपर मंदिर नहीं बना सकते जो कि हास्यापद है आज के हमारे पुरातत्त्ववेत्ता और खोजकर्ता भी उन्हीं के पथ का अनुसरण करते है। जैन धर्म के प्रति उनकी अनभिज्ञता तथा एकांगी विचारधारा लोगों को सिर्फ भ्रमित ही नहीं कर रही बल्कि असत्यता का पोषण भी करती है। हम चाहते है कि इस महान तीर्थ की पवित्रता को बनाये रखते हुए पुनः साधु-सन्त और श्रावक आदि वहाँ जाये ऐसी व्यवस्था की जानी चाहिए, इसी आशा एवं विश्वास के साथ अपने इस शोध लेख को यहाँ विराम दे रहे हैं।

हे प्रभु, मेरे जीवन के आधार
तुम्हारी महिमा है अपरम्पार
नमन है तुमको बारंबार
करलो मेरा समर्पण स्वीकार।

जनम और मृत्यु एक कहानी है,
कर्मों की लीला यह न्यारी है,
मुक्ति की चाह बहुत पुरानी है,
हे ऋषभनाथ विराज रहे है अष्टापद पर
हे आदिनाथ............

नव संवत लाया यह संदेश निराला,
सुख-दुःख से भरे इस जीवन में भर दिया उजाला,
देवी अंबिका की कृपा से आज अष्टापद साक्षात पाया

जिन मूर्ति, चीन

अम्बिका देवी, सिचुआन

मुनियों की निर्वाण भूमि (कैलास)

मुनियों की निर्वाण भूमि (कैलास)

अष्टापद

अष्टापद

जिन मूर्ति, सिचुआन चीन

बर्फ चोटी पर चैत्यालय (तिब्बत)

मुनि सुव्रत स्वामी, चीन (नमन मुद्रा में राम लक्ष्मण)

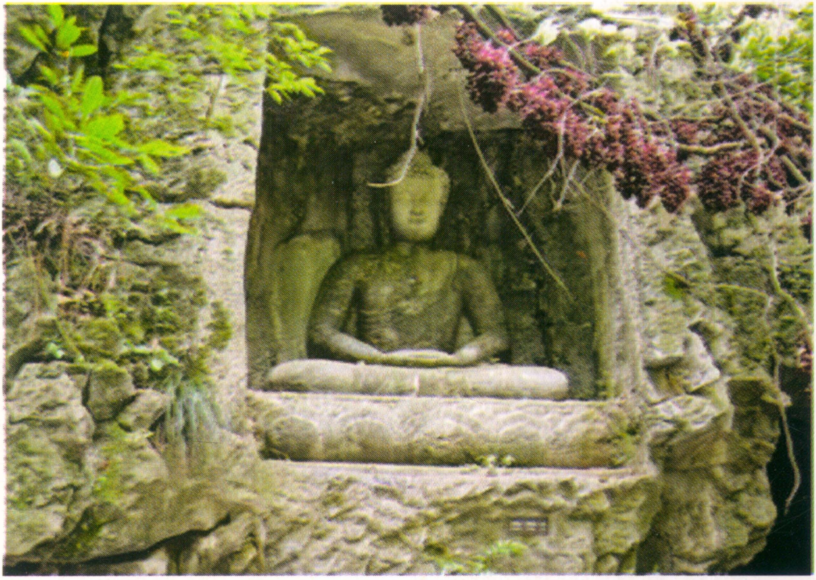

जिन मूर्ति, चीन

जिन पट, चीन

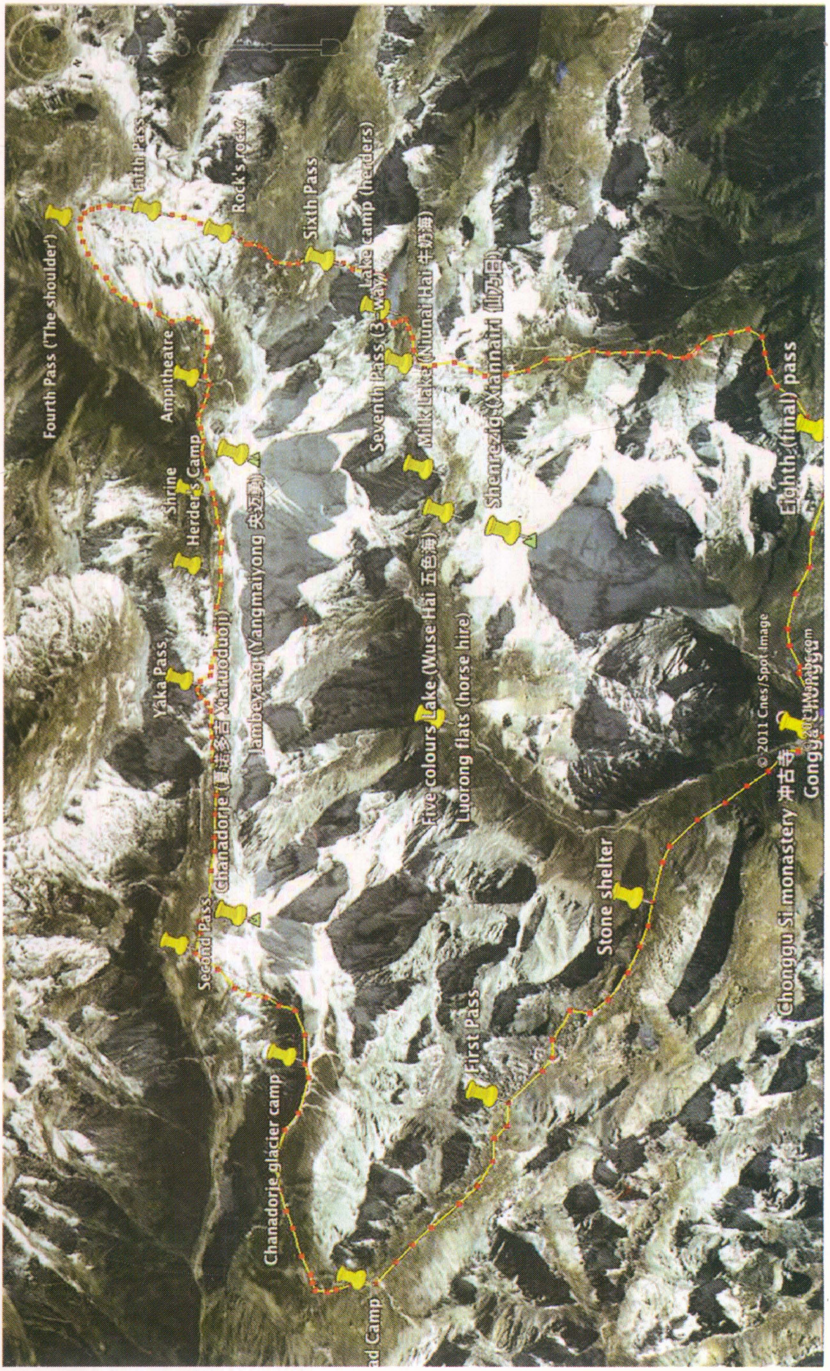

अष्टापद परिक्रमा पथ

हरिणगमेषी देव, चीन

स्तूप, चीन

कैलास, सिचुआन

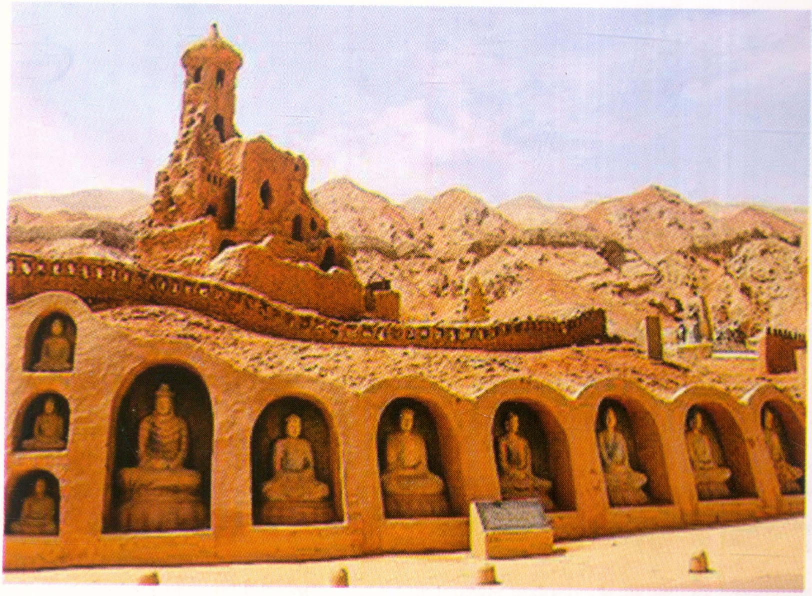

जिन प्रतिमाएँ, चीन

अष्टापद की गुम्फाएँ

कोनकन गुम्फा से कैलास

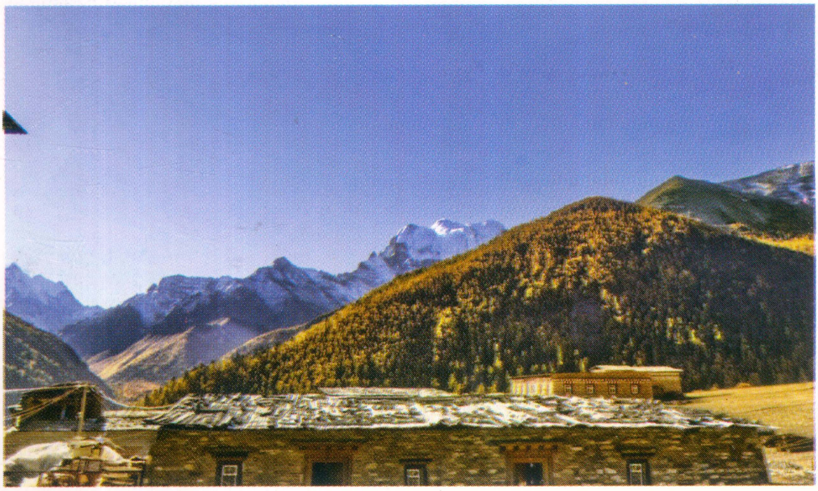

आडिन क्षेत्र

पाँचसौ अर्हत, चीन

मुनियों की निर्वाण भूमि (कैलास)

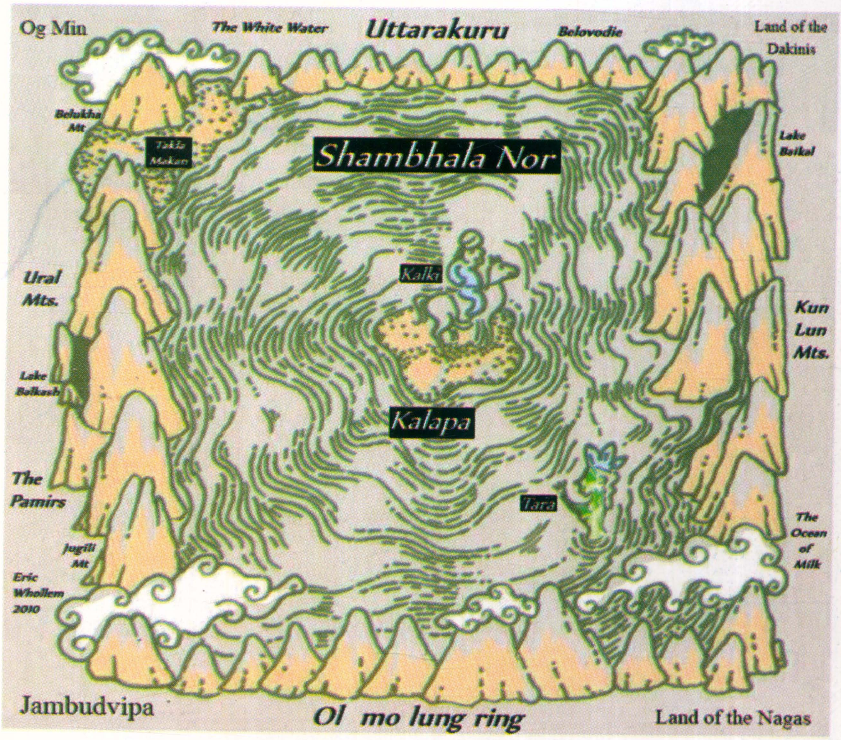
Og Min
The White Water
Uttarakuru
Belovodie
Land of the Dakinis
Belukha Mt
Shambhala Nor
Lake Baikal
Ural Mts.
Kalki
Kun Lun Mts.
Lake Balkash
Kalapa
The Pamirs
Tara
The Ocean of Milk
Jugili Mt
Eric Whollem 2010
Jambudvipa
Ol mo lung ring
Land of the Nagas

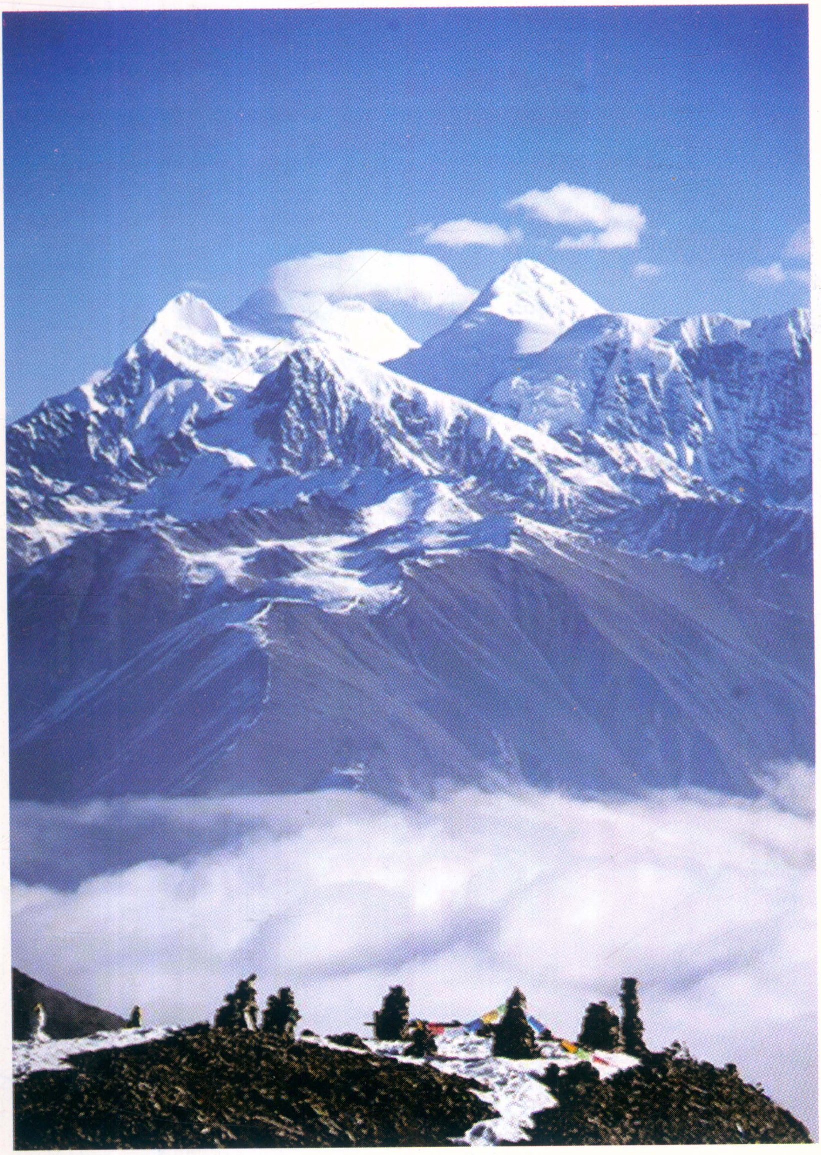

कैलास क्षेत्र

With Best Compliments from :

SWETA CATERERS

Specialist in

OUTDOOR CATERING
COOKING & SERVICE

Office :
184, JAMUNALAL BAJAJ STREET
3RD FLOOR, KOLKATA - 700 007
PHONE : 22734216

Residence :
6/4, RAJ KRISHNA KUMAR STREET
(JAHAJBARI) BELURMATH, HOWRAH
PHONE : 2654 4016 / 7959

J. C. Patwa : 9830143688
S. K. Patwa : 9331926418

Postal Reg. No. KOL.RMS / 70/2013-15
R.N.I. 30181/77

Creators of Prestigious Interiors
Established 1970

Creativity is a Modern Religion

Nahar

Architects, Interiors, Consultants

5B, Indian Mirror Street, Kolkata-700 013
Phone : 2227-5240/45, Fax : 22276356
Email Id : info@nahardecor.com